तेरी मेरी सबकी बात

नारी स्वातंत्र्य की कैसी अवधारणा ?

पिछले दो महीनों में दो वीडियो चर्चा में रहे हैं। सोशल मीडिया में दोनों पर लोगों की प्रतिक्रियायें आती रही हैं। दोनों ही वीडियो स्त्री-मुद्दों पर फिर से लंबी बहस के साथ-साथ आधारभूत प्रश्नों पर एक बार फिर बात करने का रास्ता खोल देते हैं। बी.बी.सी. के लिये लेस्ली उडविन द्वारा बनाई गयी फिल्म 'इंडियाज़ डॉटर' में दिसंबर 2012 में पाशविक तरीके से निर्भया का सामूहिक बलात्कार कर उसे मौत के मुँह में पहुँचाने का काम करने वाले बलात्कारियों में से एक मुकेश सिंह और उसके समर्थन में उसके वकीलों के इंटरव्यू पर चर्चा भी लगातार चलती रही है। दिसंबर 2012 का आक्रोश फिर संसद से लेकर सड़क तक दिखाई दिया और सबसे (सस्ता और) आसान समाधान दिखा कि इंटरव्यू को प्रतिबंधित कर दिया जाय-उसे सोशल मीडिया से हटा दिया जाय। ये आवाज़ें भी आईं कि मुकेश सिंह को कल दी जाने वाली फाँसी की सज़ा भी तुरत-फुरत आज ही दे दी जाय।

अवांछित, शर्म दिलाने वाले प्रकरणों को सामने आने से रोक कर, प्रतिबंधित कर ये घटनाएँ न रुकी हैं, न रुकेंगी। निर्भया प्रकरण में ही पूरा देश जब उबाल पर था, मध्यवर्ग पूरी संवेदनशीलता के साथ प्रतिरोध की आवाज़ तेज कर रहा था, उस समय भी देश के नेता, धर्मगुरु, संत-महंत क्या प्रतिक्रियायें दे रहे थे, यह सभी को याद है। यानि 'ऐसे हालात के लिये खुद जिम्मेदार हैं स्त्रियाँ...' जैसा भाव ही प्रसारित किया जा रहा था। स्त्री संगठन और सिविल सोसायटी के लोगों ने फिर इन सब प्रलापों को शर्मनाक करार दिया और चारों ओर जब ऐसे पुरुषवादी उद्गारों की भर्त्सना हुई तो सफाइयां पेश की गयीं, 'बयानों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करने' के लिये मीडिया को जिम्मेदार ठहराया जाने लगा। आखिर हमारे नेता भी उसी पुरुषवादी समाज के हिस्से हैं। वे साधन और शक्ति संपन्न हैं। सामान्यतः आज भी सामंतवादी व्यवस्था में पुरुषों की मानसिकता में बदलाव कैसे संभव है। फिर धार्मिक नेताओं, संत-महंत, गुरुओं से तो इसके अलावा कुछ और उम्मीद की भी नहीं जा सकती। स्त्री की गुलामी के लेखाकार तो हमारे धर्मग्रंथ ही हैं इसलिये निर्भया जैसी स्थितियों के लिये स्त्री नैतिकता का पाठ इसी रूप में पढ़ाया जा सकता था... और पढ़ाया जा रहा है।

इसके बरअक्स अब जो, 'माय चॉयस' नाम से अभिनेत्री दीपिका पादुकोन तथा ढेर सारी अन्य मॉडल्स का जो वीडियो आजकल चर्चा में है... उसने स्त्री सशक्तीकरण और आज़ाद स्त्री की बहस का रुख ही मोड़ देना चाहा है। यह अतिवाद का दूसरा छोर लगता है। 'वॉग' पत्रिका फैशन की दुनियाँ के बड़े मल्टीनेशनल ब्रांड के सौंदर्य प्रसाधनों और पोशाकों के लिये जानी जाती है। अक्सर पत्रिका के पन्नों में आने वाली अभिनेत्रियां-मॉडल्स विवाद का विषय भी बनती रही हैं। यह कोई खास बात नहीं है क्यों कि सौंदर्य-फैशन और स्त्री, विज्ञापन की दुनिया में समानार्थी हो जाते हैं और व्यापार जगत के लिये आवश्यक बन जाते हैं। इसी वॉग पत्रिका के इंडिया संस्करण के लिये दीपिका पादुकोन सहित ढेर सारी अन्य मॉडल्स के साथ बने इस वीडियो को होमी अडजानिया ने प्रस्तुत किया है। होमी आडजानिया फैशन और विज्ञापन की दुनिया में एक बड़ा नाम है जो कभी-कभी फिल्में भी बनाते हैं। यह वीडियो दरअसल वॉग पत्रिका ने 'कॉरपोरेट सोशल रेसपॉन्सिबिलिटी' के नाम पर बनाया है जो हिन्दुस्तान के स्त्री समाज के सशक्तीकरण के नाम पर न सिर्फ छल है बल्कि गैरजिम्मेदाराना भी है। यूँ भी आजकल बड़ी-बड़ी कंपनियां अपने सौंदर्य प्रसाधनों और उत्पादों के प्रचार में यह चिपकाना नहीं भूलतीं कि इस उत्पाद से प्राप्त मुनाफे का एक प्रतिशत-दो प्रतिशत सामाजिक कार्यों, जैसे बच्चों की शिक्षा, उनके पुनर्वास... जैसे कामों में लगाया जायेगा। यह प्रचार कैसा छलावा है कि आज तक ऐसी कोई योजना का प्रारूप या उसका क्रियान्वयन जनता के सामने, जरूरतमंद समूहों के सामने प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देता।

स्त्री सशक्तीकरण का वीडियो है इसलिये सौंदर्य का प्रतिमान देह तो होगा ही। इसलिये 'माय चॉयस' में दीपिका पादुकोन तथा अन्य मॉडल्स मस्ती से नाच रही हैं, झूम रही हैं और अपनी स्वातंत्रता की घोषणा कर रही हैं। मैं कैसे रहूँ... क्या करूँ यह, मेरी मर्ज़ी (चॉयस) है। मैं कैसे कपड़े पहनूँ, न पहनूँ मेरी मर्ज़ी है।

मैं प्रेम करूँ न करूँ मेरी मर्ज़ी है। मैं किसी के साथ स्थाई प्रेम करूँ... अस्थाई करूँ मेरी मर्ज़ी है। मैं किसके साथ सेक्स करूँ... न करूँ मेरी मर्ज़ी है। मैं वैवाहिक संबंध बनाऊँ विवाहेतर संबंध बनाऊँ मेरी मर्ज़ी है... घोषणाओं की सूची लंबी है जो स्त्री सशक्तीकरण की कॉरपोरेटीय अवधारणा प्रस्तुत करती है।

दीपिका पादुकोन और अन्य ने स्त्री स्वातंत्र्य और अधिकार का जो चित्र प्रस्तुत किया है, उसके बरक्स लेस्ली उडविन का 'इंडियान् डॉटर' दो विपरीत छोरों पर दिखाई देते हैं। सुना गया है कि लेस्ली उडविन ने इसके लिये मुकेश सिंह की माँ से संपर्क किया था और उन्हें तैयार किया था। दिल्ली के ही किसी पत्रकार ने बातचीत में यह भी बताया कि इसके लिये मुकेश सिंह ने लंबी चौड़ी रकम भी मांगी थी जिस पर आपसी बातचीत द्वारा काफी कम कराया गया। संभवतः मुकेश सिंह और उसकी माँ ने सोचा हो कि हो सकता है कि इस इंटरव्यू के द्वारा उन्हें मुकदमे में कुछ मदद मिले। मुकेश सिंह के सामने दो विकल्प थे। या तो बचाव की मुद्रा में वह आरोपों से मुकरता जो सारे सबूतों और उसके बाद अपराध कबूलने की स्थिति में संभव नहीं था। इसलिये ये स्वाभाविक लगा कि वह अपने कृत्य को तर्कसंगत ठहराये और अपराध की आत्म स्वीकृति के बाद अपराध होने की जिम्मेदारी का ठीकरा दूसरे के ऊपर, यानी बलत्कृत हुई स्त्री पर फोड़े जो हमारे समाज में पुरुषवादी मानसिकता के कारण सामान्य सी बात है। इसीलिये जब अपराधी ठिठाई से अपने द्वारा किये गये (अमानुषिक) कृत्य के लिये पीड़िता को जिम्मेदार ठहरा रहा है तो उसका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष समर्थन समाज का एक हिस्सा भी कर रहा है। नेताओं, महंतों, स्वामियों और धर्मगुरुओं को सार्वजनिक जीवन में बयान भी देने होते हैं इसलिये हम लोग इनके उद्गारों से अचंभित नहीं हुए। जिन्होंने बयान नहीं दिये उनमें भी बड़े हिस्से की शायद यही अवधारणा रही होगी। अब अगर निर्भया ने छोटे कपड़े नहीं पहने थे तो 'वह रात को क्यों घर से बाहर निकली'... 'क्यों अपने पुरुष मित्र के साथ थी' जैसे सवाल भी उठे थे। यानि खरबूजा छुरी पर गिरे या छुरी खरबूजे पर, कटना तो खरबूजे को ही होगा। यह आज भी हिन्दुस्तान के बृहत्तर समाज का सच है जहाँ अधिकांश लोग ऐसे ही सोचते हैं जैसे मुकेश सिंह ने सोचा और कहा, उसके वकीलों ने कहा.... और समाज के बहुत-बहुत सारे जिम्मेदार लोगों ने कहा।

दीपिका पादुकोन का वीडियो स्त्री सशक्तीकरण की जिस अवधारणा को प्रस्तुत करता है, वो स्त्रियाँ कहाँ हैं.... किस वर्ग से हैं और कितनी संख्या में हैं? कारपोरेट घराने, उनके व्यवसायिक संस्थान लंबी शृंखला के ब्रांडेड सौंदर्य प्रसाधन बनाते हैं, पोशाकें बनाते हैं और बहुविध तरीकों से उनका प्रचार करते हैं। हिन्दुस्तान में सामाजिक विकास की प्रक्रिया आज अजीब चाल से चल रही है और गहन अंतर्विरोधों को उजागर कर रही है। एक ओर कारपोरेट घरानों की पूँजी बढ़ रही है, नये खिलाड़ी सत्ता और शासन की छत्रछाया में शीर्ष पर पहुँच रहे हैं। उन्हें मालूम है कि व्यापार में प्रतिस्पर्धा में रहना है तो मीडिया को भी नियंत्रित करना होगा। मीडिया आज सिर्फ राजनीति और सत्ता के मंतव्यों को ही नहीं बल्कि व्यवसायिक घरानों के व्यापारिक हितों के लिये भी चाकरी कर रहा है। मल्टीनेशनल ब्रांड की कंपनियों के लिये भारत का मध्यवर्ग एक बड़ा चारागाह है। विज्ञापन जगत के धुरंधर आज सौंदर्य के प्रतिमानों को स्त्री देह तक ही सीमित किये दे रहे हैं। स्त्री देह कितना पुरुषों को लुभा सकती है, यही उसकी सार्थकता है, उसके जीवन की नियति है... यही समझाने का प्रयास मध्यवर्ग से लेकर शहरी निम्न-मध्यवर्ग को कर रहे हैं। वह सौंदर्य, वह देह जो पुरुष को मोह सके, सफलता की कुंजी है... यह मंत्र दिया जा रहा है। नगरीय जीवन में, शहर के चमकते वातावरण में जगह-जगह पर जो स्लम क्षेत्र उपस्थित हैं वे मानो 'फेयर एंड लवली' से चिकने चमकदार किये चेहरे पर धब्बों के रूप में दिखाई देते हैं। ये अलग बात है कि बड़े शहरों या महानगरों में अगर ये स्लम न हों तो संभ्रांत और संपन्न वर्ग की महिलाओं का जीवन कष्टमय हो जायेगा। तकलीफ इस बात की है कि स्लम में रहने वाले श्रमिक परिवारों में न केवल स्त्रियाँ घरों में घरेलू नौकरानियों के रूप में काम करती हैं बल्कि बारह-चौदह साल से ही इनकी बच्चियां भी माँ के साथ या स्वतंत्र रूप में काम करने लगती हैं। मुझे घरों में काम करने वाली इन लड़कियों/ बच्चियों में आज तक कोई नहीं मिली जो पढ़ी-लिखी हो या पढ़ाई में रुचि रखती हो। ये लड़कियां दो-तीन हजार रुपया स्वतंत्र रूप से कमा लेती हैं। मल्टी नेशनल ब्रांड इस वर्ग की आपूर्ति के लिये भी साबुन से लेकर गोरा होने की क्रीम, पाउडर तथा अन्य अनेक प्रसाधन सामग्री का निर्माण कर रहे हैं और उनके कठिन श्रम की कमाई से मुनाफा बटोर रहे हैं। उनके रोल मॉडल टी.वी. में दिखाई देने वाली ये

अभिनेत्रियां हैं जो विज्ञापनों में अपने सौंदर्य प्रसाधनों के बल पर ही पुरुषों को रिझा रही हैं। इसीलिये सौंदर्य प्रसाधन हैं... तो प्रेम है... तो फिर बॉय फ्रेंड है... तो फिर दोस्ती है। दोस्ती हो गयी तो फिर मिलना मिलाना अनिवार्य है। अब दोस्त अपनी उपलब्धि का अकेले उत्सव नहीं मना सकता इसलिये इस प्रेम का अंत 'गैंगरेप' में होता है। यह ध्यान देने वाली बात है कि 'रेप' और 'गैंगरेप' की घटनाओं में पीड़िता नब्बे प्रतिशत निम्न और निम्नमध्वर्ग से आने वाली लड़कियां हैं।

अति संपन्न वर्ग में लड़के-लड़कियों की अपनी जीवन शैली से ये प्रकरण अलग ही स्थितियां प्रदर्शित करते हैं। विज्ञापन संसार की इस आभासी दुनिया ने सौंदर्य के प्रतिमान बदल दिये हैं, स्त्री देह को एक बार फिर भोगवादी प्रवृत्तियों का साधन बना दिया है।

इन दोनों वीडियो में दीपिका पादुकोन का बयान जो स्त्री देह की स्वतंत्रता के अर्थ को जिस रूप में स्थापित कर रहा है, मुकेश सिंह के बयान की परंपरागत पुरुषवादी सामंती प्रवृत्ति की स्पष्टता के साथ एक जैसा दिखाई देने लगता है। कुछ वर्ष पहले किंग फिशर एयर लाइंस के मालिक विजय माल्या सत्ता पक्ष के बहुत चहेते थे। विजय माल्या उन दिनों अन्य अनेक कारणों के अलावा अपने इंटरनेशनल ब्रांड के कैलेंडरों के लिये भी चर्चित थे। एक बार उनका बयान पढ़ा कि अब हिन्दुस्तान भी विकास कर रहा है, क्योंकि कैलेंडरों का निर्माण इंटरनेशनल स्तर का है। टी.वी. में दिखाये गये उनके द्वारा निर्मित इन कैलेंडरों में मशहूर मॉडल्स के न्यूनतम वस्त्रों में उत्तेजक भाव भंगिमाओं के साथ फोटो थे और ये फोटोशूट दुनिया के विभिन्न समुद्र तटों पर किये गये थे। विपुल संपत्ति के मालिक विजय माल्या आज भी एक आइ.पी.एल. क्रिकेट टीम के स्वामी हैं। किंग फिशर एयर लाइंस तो बंद हो गयी और उन्होंने अपने को दीवालिया बना लिया। उसके कर्मचारियों द्वारा लंबी अवधि के वेतन का भुगतान न होने के कारण गाहे-बगाहे उनके प्रतिरोध के समाचार आते रहते हैं। तो विजय माल्या जैसे बड़े शराब के व्यवसायी समाज के विकास का पैमाना अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उसकी देह का प्रदर्शन ही मानते हैं क्योंकि वह व्यापार का साधन बनती है। उनका व्यवसायिक प्रभामंडल बरकरार है इसलिए पूँजीपति जो अपने मजदूरों के साथ करता है, वैसा ही उनके कर्मचारियों के साथ हुआ।

सवाल ये है कि दीपिका पादुकोन और उनकी सहयोगी फैशन की दुनिया की ये मॉडल्स कितने प्रतिशत स्त्री समाज का प्रतिनिधित्व करती हैं। इन नाचती-गाती, मस्ती में थिरकती मॉडल्स को देखकर लगता है कि क्या सचमुच हमारी स्त्रियां इतनी स्वतंत्र हैं, खुशहाल हैं? दिमाग में यूनाइटेड नेशन्स की विकासदर निर्धारित करने वाली कमेटी की रिपोर्ट जेहन में उभरती है जिसमें कहा गया है भारत में अधिकांश (74 प्रतिशत गर्भवती और 70 प्रतिशत सामान्य) स्त्रियां कुपोषित हैं। दुनिया की कुपोषित बच्चियों में हर तीसरी कुपोषित बच्ची हिन्दुस्तानी है। आज भी प्रसव के दौरान बड़ी संख्या में औरतें (198 से लेकर 300 तक प्रति एकलाख में) काल कवलित हो जाती हैं। गाँव-देहात में स्त्री साक्षरता 50 तक भी नहीं पहुँच पायी है-माध्यमिक और उच्च शिक्षा की कौन कहे। क्या ये चिंता की बात नहीं कि स्त्री विकास के सूचकांक को देखते हुए हमारा देश 187 देशों की सूची में 132 वें नंबर पर रहता है। विकास और स्त्री सशक्तीकरण की स्थितियों में हम गरीब-पिछड़े सहारा क्षेत्र के अफ्रीकी देशों के साथ हैं। हाँ, हम खुश हो सकते हैं कि हमारे यहाँ लगातार कितनी सुंदरियां मिस वर्ल्ड और मिस यूनीवर्स चुनी गयीं और आज बड़े अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक घरानों के सौंदर्य उत्पाद बेचने में उनकी स्त्री देह अग्रणी है।

'माय चॉयस' में दीपिका और उनकी साथी अपने प्रेम, अपने संबंधों और यौन संबंधों की स्वतंत्रता पर, अपनी पोशाक, कपड़े, पहनने, ना पहनने को लेकर जो घोषणाएं करती हैं, वह उनकी मर्जी हो सकती है। हमारी चिंता मध्यवर्ग से लेकर निम्नवर्ग तथा निम्नमध्यवर्ग के स्त्री समाजों को लेकर है। इसके अलावा इसका प्रभाव नौजवान वर्ग भी ग्रहण करता है और यौन विकृतियों का शिकार होता है। दिसंबर 2012 में निर्भया कांड के बाद पूरा देश जैसे गुस्से से उबल रहा था। इसके दूसरे-तीसरे दिन ही पाँच साल की बच्ची के साथ वैसा ही पाशविक अत्याचार हुआ। फिर लगभग एक हफ्ते बाद एक और तीन साल की बच्ची ऐसे ही हादसे का शिकार हुई। इन सभी केसों में आरोपी अधिकतर गाँव-देहात से छोटी नौकरी करने वाले, शहरों में सिर छिपाने की जगह ढूँढ रहे नौजवान रहे हैं। उन्मुक्त प्रेम प्रदर्शन करने वाले वीडियो ऐसे साधनहीन, भटक रहे नौजवानों की मानसिकता को और विकृत कर उन्हें उकसाते हैं। अब दीपिका पादुकोन सरीखी

महिलाएं तो ऐसे भटके नौजवानों के लिये आकाश कुसुम हैं लेकिन उनकी उत्तेजना और विकृत यौनेच्छा का शिकार असहाय, मासूम बच्चियां, स्कूल जाती या काम पर जाने वाली श्रमिक लड़कियां बनती हैं। मैंने पहले भी अपने एक लेख में कहा था कि ''हम जैसे चाहें कपड़े पहने, यह हमारी आज़ादी है और इसका कोई संबंध बलात्कार से नहीं है'' जैसी अवधारणा उनके लिये ठीक है जो 'स्लट' मार्च में शामिल होती है या 'माय चॉयस' में नाच रही होती है। लेकिन इसका प्रभाव पुरुषों, विशेषरूप से लुंपन, साधनहीन युवकों पर पड़ता है और बच्चियां और मासूम लड़कियां उनका शिकार बनती हैं जिनका विकास और सशक्तीकरण की इस बाजारवादी व्यवसायिकता द्वारा निर्मित स्त्री स्वातंत्र्य की इस छवि से दूर-दूर तक नहीं है।

फिर मुकेश सिंह पर आते हैं। निश्चित रूप से उसका बयान घृणित है। पुरुषवादी सामंती मानसिकता का प्रतीक है जहां स्त्री केवल यौनिक इकाई है, भोगवाद का साधन है। सवाल ये है कि समाज में मुकेश सिंह जैसे बलात्कारी लोगों की संख्या लगातार क्यों बढ़ रही है? बलात्कार के प्रकरण तो लगातार बढ़ रहे हैं। क्या ये व्यवस्था का संकट नहीं है? किसान कहीं राजी-खुशी जमीन बेच रहा है तो कहीं जबरन उससे जमीन खरीदी जा रही है। मुआवजा उसे स्वर्ग के सपने दिखाने लगता है। मुआवजे की रकम कुछ दिन तो स्वर्ग की सैर कराती है और फिर वहीं वापिस ले आती है। गाँव के नौजवान हों या उजड़ा हुआ, विस्थापित आदिवासी समाज हो, रोजगार के लिये शहरों में भटकता है। अपने समाज, सामूहिक जीवन पद्धति से कटकर आसमान में कटी पतंग की तरह शहर में डोलता, घर परिवार से दूर कुंठाओं में जीता नौजवान। भविष्य की कोई आशा नहीं। घर-परिवार का सुकून नहीं। ऐसे में अपने समाज परिवारीजनों से कटे, शहरों के ये नौजवान, मुकेश सिंह में ही तब्दील होने लगते हैं।

इसीलिये देखा जाय तो 'माय चॉयस' न दीपिका पादुकोन की है और न उन जैसी अन्य मॉडल्स की। ये चॉयस कॉरपोरेट घरानों की है, उत्पाद बेचने वाली कंपनियों की है, बाजार की है। सामाजिक दायित्व (सोशल रिसपान्सिबिलिटी) की पूर्ति के नाम पर बनाया जाने वाला वीडियो कौन सा सामाजिक दायित्व निभा रहा है, कौन सी कल्याणकारी परियोजना शुरू कर रहा है, कौन सी मुफ्त स्वास्थ्य सेवा देने वाला सामुदायिक अस्पताल चला रहा है... जिनकी जरूरत है। कोई सरकार, कोई व्यवस्था अभी तक उजड़े आदिवासी, विस्थापित समुदायों के पुनर्वास के लिये, उनके रोजगार के लिये प्रभावी परियोजनाएं नहीं निर्मित कर सकी हैं।

स्त्री स्वातंत्र्य की अवधारणा अपने देश में एक वर्ग आधारित विमर्श की मांग करता है। यह बाजारवाद पर आधारित वीडियो 'माय चॉयस' दिग्भ्रमित करने का और मध्यवर्गीय चेतना को कुंठित करने का प्रयास है।

28-एम.आई.जी.
अवन्तिका-।
रामघाट रोड, अलीगढ़